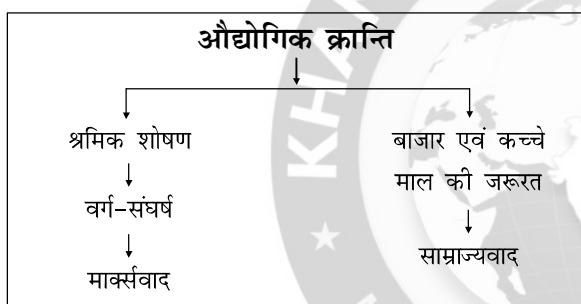
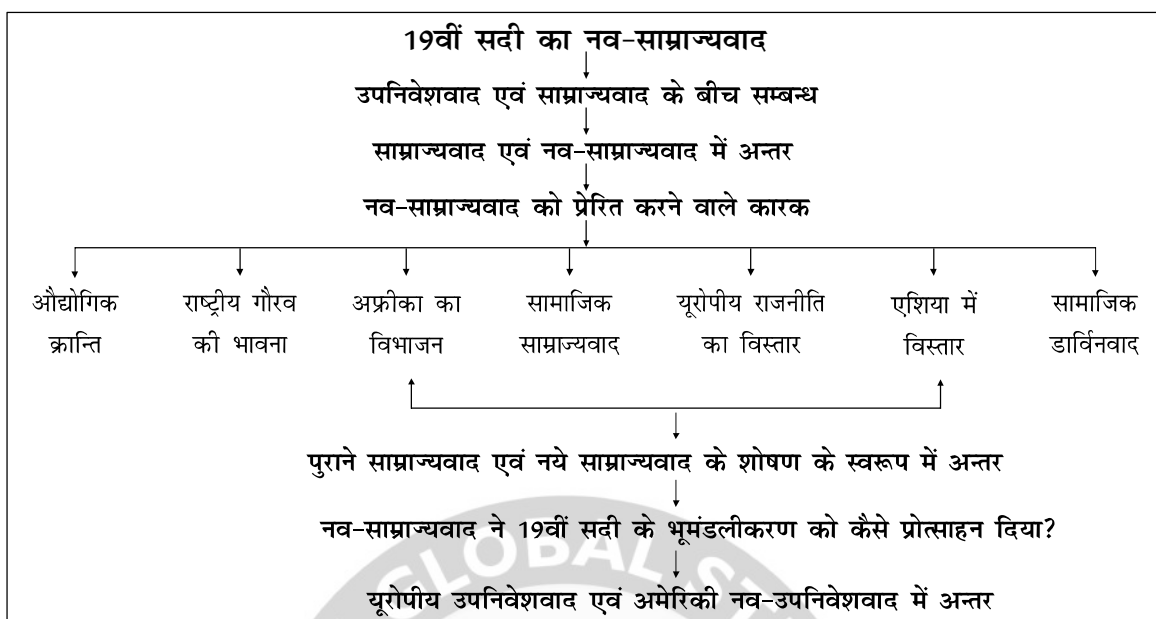


**विश्व इतिहास (खंड-III)**  
**उपखंड-III: उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद**



1. **अमेरिकी क्रांति**- एक आंदोलन के पश्चात् विश्व के सबसे पहले उपनिवेश के रूप में 1783 ई. में संयुक्त राज्य अमेरिका स्वतंत्र हो गया। यह पुरानी औपनिवेशिक नीति के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया थी।
2. एडम स्मिथ द्वारा अपनी पुस्तक **‘वेल्थ ऑफ नेशन्स’** में वाणिज्यवाद की आलोचना की गई तथा मुक्त अर्थव्यवस्था के सिद्धांत पर बल दिया गया। उनका यह मानना था कि उपनिवेशवाद से प्राप्त लाभ उपनिवेश के लिए किए गए व्यय की तुलना में कम होता है। आगे कॉबडेन नामक एक ब्रिटिश विचारक और नेता ने घोषित किया कि ब्रिटेन के लिए सुखद स्थिति यह होगी कि वह अपने उपनिवेश के प्रत्येक क्षेत्र को स्वतंत्र कर दे।
3. 19वीं सदी के आरंभ में साइमन बोलिवर के नेतृत्व में **लैटिन अमेरिका स्थित स्पेन के उपनिवेशों में स्वतंत्रता** आंदोलन का आरंभ तथा इस आंदोलन के पश्चात् उपनिवेशों का स्वतंत्र हो जाना।
4. 1823 ई. में **मुनरो सिद्धांत की घोषणा** ने अमेरिकी महाद्वीप में यूरोपीय साम्राज्यवाद को गहरा धक्का पहुँचाया।
  - फिर साम्राज्यवाद का दूसरा चरण 1870 के दशक तथा उसके पश्चात् परिवर्तित रूप में प्रकट हुआ तथा प्रथम विश्व युद्ध तक एशियाई-अफ्रीकी महाद्वीपों में यूरोपीय शक्तियों का उग्र विस्तार होता रहा। इसे मूलतः औद्योगिक क्रांति से प्रेरणा मिली। इसे ‘नव-साम्राज्यवाद’ के नाम से जाना गया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् इस साम्राज्यवाद को धक्का लगा तथा एशिया एवं अफ्रीका में उपनिवेश

■ **उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद के बीच संबंध:-**

- ‘साम्राज्यवाद’ शब्द का प्रयोग 19वीं सदी के अंत में आरंभ हुआ। ‘साम्राज्यवाद’ एवं ‘उपनिवेशवाद’ इन दोनों शब्दों के संबंधों को लेकर काफी विवाद है, परन्तु कुल मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि अगर उपनिवेशवाद एक दृष्टिकोण है, तो साम्राज्यवाद उसका क्रियान्वयन। दूसरे शब्दों में, सामान्यतः ऐसा माना जाता है कि अगर एक देश, दूसरे देश पर राजनीतिक, आर्थिक नियंत्रण स्थापित कर लेता है, तो वह साम्राज्यवाद की स्थिति है। वहीं अगर संबंधित देश के शोषण के संदर्भ में वह कोई निश्चित नीति अपनाता है, तो उसे ‘उपनिवेशवाद’ का नाम दिया जाता है।

■ **साम्राज्यवाद एवं नव-साम्राज्यवाद में अंतर:-**

- सामान्यतः यूरोपीय साम्राज्यवाद को दो चरणों में देखा जाता है। प्रथम चरण भौगोलिक खोज के साथ 16वीं, 17वीं सदी में आरंभ हुआ। यह वाणिज्यवादी आर्थिक दर्शन पर आधारित था। इसे ‘साम्राज्यवाद’ के नाम से जाना गया। यह लगभग तीन शताब्दियों तक चला, किंतु 18वीं सदी के अंत तक इसका पतन हो गया। इसके निम्नलिखित कारण थे-

मुक्ति की प्रक्रिया आरंभ हुई और 1980 के दशक तक अधिकांश देश स्वतंत्र हो गए। परंतु कुछ आलोचकों का मानना है कि उपनिवेशवाद समाप्त नहीं हुआ, उसने केवल अपना रूप परिवर्तित किया। इसे 'नव-उपनिवेशवाद' के नाम से जाना गया।

### उपहार प्रणाली

- 16वीं सदी तथा 18वीं सदी के बीच यूरोपीय कंपनियों के द्वारा जो सामग्रियाँ उपनिवेशों से प्राप्त की गईं, उसे 'उपहार प्रणाली' के नाम से जाना गया क्योंकि यूरोपीय कंपनियों ने जो प्राप्त किया उसके बदले संबंधित उपनिवेश को कुछ प्राप्त नहीं हुआ। उपहार प्रणाली के निम्नलिखित पहलू थे-
  1. अमेरिकी महाद्वीप से यूरोपीय कंपनियों को बड़ी मात्रा में सोने एवं चाँदी के रूप में कीमती धातु प्राप्त हुई।
  2. यूरोपीय कंपनियाँ आरंभ में अमेरिका से प्राप्त कीमती धातु के माध्यम से एशियाई उत्पाद खरीदती रही थीं। परंतु आगे चलकर जब उन्होंने इस भू-भाग पर कब्जा कर लिया और यहाँ से राजस्व वसूलने लगे, तो फिर उस राजस्व की रकम से ही क्षेत्रीय उत्पाद खरीद कर मुनाफा कमाने लगे और कीमती धातु का आना बहुत कम हो गया। अतः यह सामग्रियाँ अब उपहार बन गईं क्योंकि यह एशिया से यूरोप की ओर एकतरफा हस्तांतरण था।
  3. यूरोपीय कंपनियों के द्वारा सामुद्रिक मार्ग पर भी एकाधिकार स्थापित किया गया। फिर तटकर एवं चुंगी की वसूली की जाने लगी और फिर उसके माध्यम से क्षेत्रीय उत्पादों की खरीद की गई।
  4. इस काल में महानगरीय राज्य का बल उपनिवेश से केवल व्यापारिक वस्तुओं के दोहन पर रहा था। संबंधित उपनिवेश की सामाजिक-सांस्कृतिक संरचना में परिवर्तन लाने में रुचि नहीं दिखाई गई।

### ■ नव-साम्राज्यवाद को प्रेरित करने वाले कारक:-

1. **औद्योगिक क्रांति का प्रभाव-** हॉब्सन, लेनिन, रोजा लक्जेंमबर्ग तथा रुडोल्फ हिलफर्टिग जैसे विद्वानों ने साम्राज्यवाद के प्रसार को पूँजीवाद से जोड़कर देखा है। निम्नलिखित रूप में पूँजीवाद को एक प्रेरक कारक माना जा सकता है-
  - i. औद्योगिक उत्पादों के लिए बाजार की जरूरत- विशेषकर इसलिए क्योंकि यूरोपीय देशों के द्वारा एक-दूसरे पर चुंगी आरोपित कर अपने बाजार को बंद करने का प्रयास किया गया। वस्तुतः 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश सरकार ने यह महसूस किया कि जर्मनी एवं संयुक्त राज्य अमेरिका तथा अन्य व्यावसायिक प्रतिद्वंद्वियों के द्वारा बहुत ही कड़ाई से संरक्षणवादी

नीति को लागू किया जा रहा था। यही वजह है कि यूरोपीय देशों ने अपनी औद्योगिक वस्तुओं के बाजार के लिए उपनिवेशों की ओर देखा।

- ii. कच्चे माल की प्राप्ति के लिए अन्य महाद्वीपों के संसाधनों का दोहन करना।
  - iii. औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप संचित पूँजी के निवेश के लिए नए क्षेत्रों पर नियंत्रण।
2. **राष्ट्रीय गौरव की भावना-** औद्योगिक क्रांति निश्चय ही एक कारण रहा था, परन्तु यही एक मात्र कारण नहीं था। हमारे समक्ष ऐसे देशों के भी उदाहरण मिलते हैं जो औद्योगिक क्षेत्र में बहुत आगे नहीं थे, परंतु साम्राज्यवाद के मोर्चे पर काफी आगे हो चुके थे। इसका उदाहरण है फ्रांस। अतः कहीं न कहीं साम्राज्यवाद का प्रसार राष्ट्रीय गौरव की भावना से भी जुड़ चुका था। इतना ही नहीं, अन्य राष्ट्र भी राष्ट्रीय गौरव की भावना से प्रेरित थे। ब्रिटेन गर्व से कहता था कि 'हमारे साम्राज्य में सूर्यास्त नहीं होता', तो जर्मनी ने जवाबी नारा दिया कि 'हमें भी सूर्य के नीचे जमीन चाहिए'।
  3. **सामाजिक साम्राज्यवाद-** नया साम्राज्यवाद केवल बाह्य कारकों से ही नहीं, बल्कि आंतरिक अथवा घरेलू कारकों से भी प्रेरित रहा था। मार्क्सवाद के प्रसार और बढ़ते हुए वर्ग-संघर्ष की स्थिति से निपटने के लिए एक सुगम उपाय था बाह्य मोर्चे पर आक्रामक नीति अपनाना। अतः यूरोपीय शासकों ने अपनी जनता का ध्यान घरेलू समस्याओं से हटाने के लिए उन्हें साम्राज्यवाद की ओर उन्मुख कर दिया। जर्मन शासक विलियम कैसर को उसके एक नौसैनिक अधिकारी ने कुछ इसी प्रकार का सुझाव दिया कि अगर आप सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी (Social Democratic Party) की प्रगति को रोकना चाहते हैं, तो साम्राज्यवाद की दिशा में आगे बढ़िए।
  4. **यूरोपीय राजनीति का विस्तार-** 19वीं सदी के यूरोप में चल रही कूटनीति ने भी नए साम्राज्यवाद के प्रसार में अहम भूमिका निभाई। जर्मन चांसलर बिस्मार्क इस बात से भयभीत हो गया था कि अफ्रीका के मामले में यूरोपीय शक्तियों का उलझाव एक बड़े युद्ध को जन्म दे सकता था तथा फिर युद्ध के कारण उसकी कूटनीतिक रणनीति बिगड़ जाती। इसलिए 1884 में उसने एक बर्लिन-अफ्रीकी कांग्रेस का आयोजन कर यूरोपीय शक्तियों के बीच अफ्रीकी महाद्वीप को विभाजित कर दिया।
  5. **सामाजिक डार्विनवाद-** सामाजिक डार्विनवाद नस्लीय श्रेष्ठता की भावना से प्रेरित था तथा राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने के लिए युद्ध और संघर्ष को अनिवार्य मानता था। अतः सामाजिक डार्विनवाद ने भी आक्रामक विदेश नीति एवं साम्राज्यवाद को प्रोत्साहन दिया।

- एक दिलचस्प तथ्य यह है कि नया साम्राज्यवाद कहीं न कहीं धार्मिक कारक से भी प्रेरित रहा था। ईसाई मिशनरियों अपनी सरकार पर यह दबाव डाल रही थी कि वह नए भू-भाग पर कब्जा करें, ताकि वहाँ ईसाई धर्म का प्रसार किया जा सके।

**अभ्यास प्रश्न:-**

1. '19वीं सदी का नव-साम्राज्यवाद राष्ट्रीय गौरव की भावना से प्रेरित था, न कि आर्थिक कारक से।' इस कथन का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए।
2. क्या आप 19वीं सदी के नव-साम्राज्यवाद के लिए महज औद्योगिक क्रांति को उत्तरदायी मानते हैं? अपने मत के पक्ष में उत्तर दीजिए।

**■ अफ्रीका का विभाजन -**

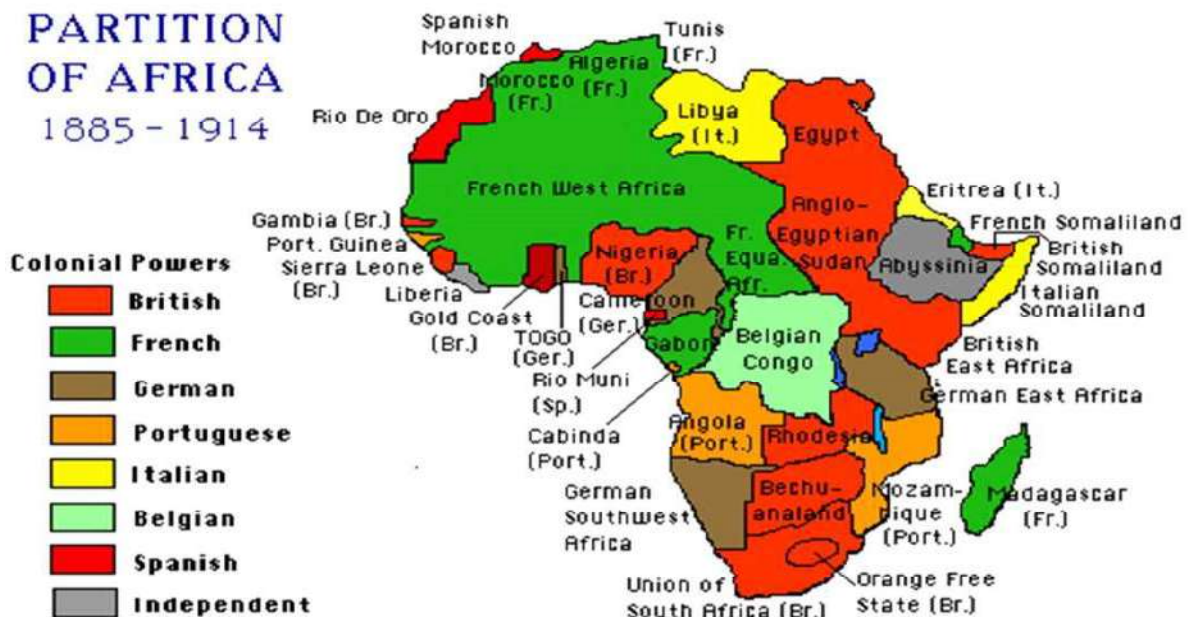
- अफ्रीका महाद्वीप, यूरोप के सबसे निकट था फिर भी 18वीं सदी के मध्य तक यूरोपीय उपनिवेशकर्ता केवल तटीय क्षेत्र तक सीमित थे। परंतु 19वीं सदी के अंतिम दशकों में अफ्रीकी महाद्वीप की ओर यूरोपीय देशों का आकर्षण इतना बढ़ गया कि अफ्रीका 1880 के दशक में 20 वर्षों के अंदर ही विभाजित हो गया। यह यूरोपीय शक्तियों के बीच अफ्रीका के बंदरबॉट (Scramble for Africa) का परिणाम था।
  - 19वीं सदी के अंत में अफ्रीका की ओर यूरोपीय देशों के आकर्षण के कारण:-
1. 'कुनैन' नामक औषधि की खोज के बाद मलेरिया जैसी बीमारी से लड़ना संभव हुआ। इसके अतिरिक्त, मशीनगन के आविष्कार ने भी यूरोपीय उपनिवेशकर्ताओं के लिए जनजातीय मुखियाओं को हराकर अफ्रीका की मुख्य भूमि में विस्तार करना आसान बना दिया।

2. अफ्रीका में होने वाले कुछ खास उत्पादों की ओर यूरोपीय देश आकर्षित हुए। ये उत्पाद थे- पाम ऑयल, प्लैटिनम, स्वर्ण, रबड़ तथा कुछ अन्य प्रकार के खनिज आदि।
3. फिर, औद्योगिक क्रांति के पश्चात् कच्चे माल एवं बाजार की जरूरत को पूरा करने के लिए यूरोपीय शक्तियों अफ्रीकी महाद्वीप की ओर आकर्षित हुईं।

4. **यूरोपीय कूटनीति का विस्तार-** तात्कालिक रूप में यह यूरोपीय कूटनीति का विस्तार था। अफ्रीका के मुद्दे पर यूरोपीय शक्तियों के बीच इतनी प्रतिस्पर्धा बढ़ गई थी कि यह एक अखिल यूरोपीय युद्ध का रूप ले सकता था। दूसरी तरफ, जर्मन चांसलर बिस्मार्क प्रत्येक स्थिति में युद्ध की स्थिति को टालना चाहता था। इसलिए उसकी अध्यक्षता में **1884 में बर्लिन-अफ्रीकी कांग्रेस का आयोजन** हुआ। इसमें 14 देशों ने हिस्सा लिया तथा इस कांग्रेस में अफ्रीका को विभाजित कर दिया गया। केवल लाइबेरिया एवं इथियोपिया बचे रहे। हिस्सा लेने वाले 14 देशों में संयुक्त राज्य अमेरिका और ऑटोमन साम्राज्य भी शामिल थे। परंतु आश्चर्य का विषय यह है कि इसमें किसी भी अफ्रीकी देश को प्रतिनिधित्व नहीं मिला।

- **यूरोपीय शक्तियों के बीच भू-भागीय क्षेत्रों का वितरण-** 1884 की बर्लिन-अफ्रीकी कांग्रेस के पश्चात् अफ्रीकी महाद्वीप का विभाजित परिदृश्य कुछ इस प्रकार था-
  - ब्रिटेन** - मिस्र, सूडान, केन्या, युगाण्डा आदि।
  - फ्रांस** - उत्तरी पश्चिमी अफ्रीका का एक बड़ा भाग; यथा- अल्जीरिया, मोरक्को, ट्यूनीशिया आदि।
  - इटली** - लीबिया, सोमाली लैंड आदि।
  - जर्मनी** - कैमरून, नामीबिया, तंजानिया आदि।
  - बेल्जियम** - काँगो।

**PARTITION OF AFRICA**  
1885 - 1914



- **विभाजन का प्रभाव-** इसका राजनीतिक एवं आर्थिक, दोनों प्रभाव देखा गया।
- **राजनीतिक प्रभाव-** अफ्रीकी समाज मुख्यतः एक जनजातीय समाज था। अतः वहाँ सामुदायिकता की मुख्य पहचान जनजातीय थी। परन्तु यूरोपीय शक्तियों ने अपने साम्राज्यवादी हित के अनुकूल उन सभी को राष्ट्र का आकार दे दिया और वेस्टफेलिया पद्धति के अनुकूल एक निश्चित भौगोलिक सीमा निर्धारित कर दी। किन्तु इसने अफ्रीकी महाद्वीप में एक नए प्रकार की जटिलता को जन्म दिया। या तो कुछ शत्रु जनजातियाँ एक राष्ट्र की सीमा के अंदर आ गईं या एक विशिष्ट जनजाति समूह के लोग दो अथवा दो से अधिक राष्ट्रों की सीमा में बँट गए। इसने अफ्रीकी महाद्वीप में अस्थिरता को जन्म दिया। उपनिवेश मुक्ति के पश्चात् इथियोपिया और सूडान विभाजित हो गया, जबकि कुछ अन्य अफ्रीकी राष्ट्र गृहयुद्ध के शिकार हो गए।
- **आर्थिक प्रभाव-** इसका आर्थिक प्रभाव भी विनाशक सिद्ध हुआ। व्यावहारिक रूप में अफ्रीकी अर्थव्यवस्था दो क्षेत्रक में बँट गई, बाह्य क्षेत्रक और आंतरिक क्षेत्रक। बाह्य क्षेत्रक पर विदेशी पूँजी का कब्जा हो गया, जबकि आंतरिक क्षेत्रक निम्न गुणवत्ता, निम्न तकनीकी पर आधारित एक पिछड़ा क्षेत्र बना रहा। इसलिए अफ्रीकी संसाधनों का लाभ उपनिवेशकर्ता देश को तो मिला, परन्तु अफ्रीकी देशों को भूख और गरीबी ही मिली।

**प्रश्न :** यूरोपीय प्रतिस्पर्द्धा की दुर्घटनाओं के द्वारा अफ्रीका को कृत्रिम रूप से निर्मित छोटे-छोटे राज्यों में काट दिया गया। विश्लेषण कीजिए। ( UPSC, 2013 )

**उत्तर:-** अफ्रीका महादेश अन्य महाद्वीपों की तुलना में यूरोप से निकट था। फिर भी 1880 से पूर्व यूरोपीय देशों ने जहाँ अन्य महाद्वीपों में प्रसार करने में विशेष रुचि दिखायी थी, वहीं अफ्रीका में वे तटीय क्षेत्रों तक ही सीमित रहे थे, किन्तु 1880 के पश्चात् उन्होंने अफ्रीका की मुख्य भूमि में तेजी से प्रसार आरंभ किया। इसके परिणामस्वरूप बीस वर्षों के अंदर अफ्रीका विभिन्न टुकड़ों में विभाजित हो गया। अगर हम इसके विभाजन के प्रमुख कारणों पर विचार करते हैं, तो पाते हैं कि जहाँ औद्योगिक क्रांति ने कच्चे माल एवं बाजार की जरूरत के कारण यूरोपीय देशों को अफ्रीका की ओर आकर्षित किया था, वहीं यूरोपीय कूटनीति ने इसका खण्डीकरण कर दिया।

अफ्रीका पर कब्जा जमाने में पहल लियोपोल्ड के अंतर्गत बेल्जियम ने की थी, जब इसने कांगो पर कब्जा कर लिया था। फिर यूरोपीय देशों में आपसी प्रतिस्पर्द्धा एवं तनाव को कम करने के लिए 1884-85 ई. में 'बर्लिन-अफ्रीकी कांग्रेस' का आयोजन किया गया तथा इसने अफ्रीका महाद्वीप को विभाजित

कर दिया। इसके परिणामस्वरूप ट्यूनीशिया, अल्जीरिया तथा अन्य क्षेत्रों पर फ्रांस का नियंत्रण हुआ। वहीं ब्रिटेन ने मिस्र, सूडान, केन्या, युगांडा आदि क्षेत्रों पर कब्जा जमाया। इतना तक कि इटली एवं जर्मनी जैसे राष्ट्र भी, जिनका निर्माण बाद में हुआ था, इस दौर में पीछे नहीं रहे। इटली तथा जर्मनी को भी अफ्रीका में एक बड़ा भू-भाग प्राप्त हुआ। फिर जैसाकि हम जानते हैं अफ्रीकी समाज एक जनजातीय समाज था, किन्तु यूरोपीय राष्ट्रों ने उस पर राष्ट्रीय-राज्य व्यवस्था को आरोपित करने का प्रयास किया। किन्तु यह व्यवस्था अफ्रीकी समाज के अनुकूल नहीं रही। यही वजह रही कि यूरोपीय शक्तियों के निकलने के बाद जनजातीय तनाव, गृहयुद्ध तथा विघटन वहाँ आम घटना बन गई।

इस तरह हम देखते हैं कि जहाँ औद्योगिक क्रांति ने अफ्रीका महाद्वीप के विखण्डीकरण का रास्ता तैयार किया, वहीं यूरोपीय कूटनीति ने इसे क्रियान्वित कर दिया।

#### ■ एशिया में साम्राज्यवाद का विस्तार-

- पुराने साम्राज्यवाद के चरण में ही यूरोपीय शक्तियों का एशिया में प्रसार हो रहा था, फिर नव-साम्राज्यवाद के युग में उन्होंने नये क्षेत्रों पर कब्जा किया तथा अपना नियंत्रण बढ़ाया। (वस्तुतः मुनरो सिद्धांत के पश्चात् अटलांटिक के पश्चिमी भाग में विस्तार पर अंकुश लग चुका था।) एशिया में विभिन्न शक्तियों ने निम्नलिखित उपनिवेश स्थापित किए-

<b>ब्रिटेन</b>	- भारत, बर्मा, श्रीलंका, ईरान का एक भाग, मलय प्रायद्वीप।
<b>रूस</b>	- साइबेरिया, मंगोलिया, ईरान का एक भाग।
<b>जापान</b>	- कोरिया, ताईवान आदि।
<b>हॉलैंड</b>	- इंडोनेशिया।
<b>फ्रांस</b>	- वियतनाम।



### ■ अमेरिकी नव-उपनिवेशवाद-

- अमेरिकी राष्ट्र के 'जीन' में ही विस्तारवाद और साम्राज्यवाद अंतर्निहित है। वह औद्योगिकीकरण की बाध्यता के कारण बाजार प्राप्त करने के लिए मजबूर था। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्त करने वाला प्रथम उपनिवेश होने के नाते वह हमेशा उपनिवेशों का वास्तविक हमदर्द होने का दिखावा करता था।
- सबसे पहले इसने 'मैनिफेस्ट डेस्टिनी' के नारे के साथ पश्चिम की ओर विस्तार किया। यह प्रक्रिया अलास्का, प्यूर्टो रिको और हवाई द्वीप आदि के अधिग्रहण तक जारी रही। जैसे ही संयुक्त राज्य अमेरिका ने अति उत्पादन की समस्या का सामना किया, वैसे ही उसने एशिया-प्रशांत क्षेत्र में नौसैनिक विस्तार की योजना बनाई। फिर वर्ष 1898 में स्पेन के विरुद्ध युद्ध लड़ते हुए इसने फिलीपींस और क्यूबा को स्वतंत्र करवाया। फिर अमेरिका ने फिलीपींस को एक अर्द्ध-उपनिवेश में परिवर्तित कर दिया और यह दर्शाने का प्रयास किया कि फिलीपींस के विकास के लिये हमें फिलीपींस में होना आवश्यक है। औपनिवेशिक महत्वाकांक्षा को एक ब्रिटिश विद्वान रूडयार्ड किपलिंग ने 'श्वेतों का अधिभार' (White Man's Burden) जैसी विचारधारा के रूप में प्रस्तुत किया। इसके अनुसार अश्वेत लोगों को सभ्य बनाना श्वेत लोगों का दायित्व है। इसे अमेरिकी नव-साम्राज्यवाद के नाम से जाना गया।

**प्रश्न:- 19वीं सदी के अंत में फिलीपींस के संदर्भ में अमेरिकी नव-उपनिवेशवाद इंडोनेशिया में डच उपनिवेशवाद और वियतनाम में फ्राँसीसी उपनिवेशवाद से पृथक् था। परीक्षण कीजिये।**

(Keywords- नव-उपनिवेशवाद का अर्थ, फिलीपींस में अमेरिकी उपनिवेशवाद, इंडोनेशिया में डच एवं वियतनाम में फ्राँसीसी उपनिवेशवाद की चर्चा, फिलीपींस के संदर्भ में अमेरिकी नव-उपनिवेशवाद पृथक् कैसे, निष्कर्ष।)

**उत्तर:-** उपनिवेशवाद का शाब्दिक अर्थ किसी समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र द्वारा किसी निर्बल, किंतु प्राकृतिक संसाधनों से परिपूर्ण राष्ट्र पर अधिकार कर अपने हितों को साधना है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अधिकतर पराधीन उपनिवेश राजनीतिक रूप से स्वतंत्र हो गए, परंतु परोक्ष रूप से किसी-न-किसी तरह उपनिवेशवाद का शिकार बने रहे, ऐसी स्थिति नव-उपनिवेशवाद के रूप में देखी जाती है। 19वीं सदी के अंत में औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप यह प्रवृत्ति फिलीपींस, इंडोनेशिया एवं वियतनाम जैसे देशों में देखने को मिलती है।

**फिलीपींस में अमेरिकी उपनिवेशवाद:** अमेरिका ने 1898 में स्पेन से युद्ध कर क्यूबा एवं फिलीपींस पर कब्जा कर लिया।

फिलीपींस पर उपनिवेश के रूप में प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित कर आर्थिक दृष्टि से अत्यधिक शोषण किया। किंतु, जब यहाँ राष्ट्रीय भावना जागृत हुई, तो फिलीपींस को अर्द्ध-उपनिवेश का दर्जा देकर कहा कि फिलीपींस के विकास के लिये अमेरिका का होना आवश्यक है। इसी समय साम्राज्यवादी लेखक रूडयार्ड किपलिंग ने श्वेतों के अधिभार की अवधारणा दी और कहा अश्वेत लोगों को सभ्य बनाने के लिये श्वेतों का होना आवश्यक है।

### ■ इंडोनेशिया और वियतनाम में डच एवं फ्राँसीसी उपनिवेश:

इन उपनिवेशों में निरंकुश शासन की स्थापना कर अत्यधिक शोषण किया गया, साथ ही डच कल्चर प्रणाली एवं भारी कर लगाकर संसाधनों का दोहन किया गया तथा लोगों को गुलाम बनाकर रखा गया।

परंतु, जब इन उपनिवेशों की तुलना करते हैं तो ज्ञात होता है कि अमेरिकी उपनिवेश की पद्धति इन दोनों से पृथक् थी। अमेरिका ने प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित कर आर्थिक लाभ के रूप में कच्चा माल एवं बाजार प्राप्त किया, परंतु लोगों को अर्द्ध-स्वतंत्रता भी प्रदान की, जिसमें शासन चलाने, आत्मरक्षा करने की स्वतंत्रता आदि शामिल थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि इंडोनेशिया एवं वियतनाम में ऐसी स्थिति देखने को नहीं मिली।

### ■ पुराने साम्राज्यवाद एवं नव-साम्राज्यवाद के शोषण के स्वरूप में अन्तर-

- **पुराना साम्राज्यवाद-** यह वाणिज्यिक पूँजीवाद से प्रेरित था, अतः इसने निम्नलिखित रूप में शोषण को अंजाम दिया-
  1. उपनिवेशों से प्राप्त रकम से ही वहाँ के उत्पादों की खरीद करना अर्थात् बदले में उपनिवेशों को कोई लाभ प्राप्त नहीं।
  2. उन उपनिवेशों से, जहाँ कीमती धातु उपलब्ध थी, कीमती धातु की लूट करना।
- **नव-साम्राज्यवाद-** यह औद्योगिक पूँजीवाद के हित से प्रेरित था, अतः इसने निम्नलिखित रूप में शोषण को अंजाम दिया-
  1. उपनिवेशों को विनिर्मित वस्तुओं के आयातक एवं कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तित कर दिया।
  2. संबंधित उपनिवेश में उद्योगों का विनाश हुआ, जिसे विऔद्योगिकीकरण का नाम दिया जाता है।
  3. संबंधित उपनिवेश के बाजार का दोहन करने के लिए आधुनिक यातायात एवं संचार व्यवस्था के रूप में रेलवे एवं टेलीग्राफ का विकास किया गया।
  4. उपनिवेशों में यूरोपीय शिक्षा पद्धति का प्रसार किया गया,

ताकि एक ऐसा वर्ग पैदा हो जिसका आकर्षण मातृदेश (जो उपनिवेश बनाता है) के औद्योगिक उत्पादों की ओर हो। इस प्रकार से औपनिवेशिक समाज विभाजित हो जाता है।

■ **नव-साम्राज्यवादियों ने 19वीं सदी में भूमंडलीकरण को कैसे प्रेरित किया?**

- वर्तमान में विश्व व्यवस्था कुछ ज्यादा ही भूमंडलीकृत हो गई है, परंतु इतिहास में कई दौर ऐसे आए, जब कुछ कारणों से भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को बल मिला और फिर उस भूमंडलीकरण का अवसान हुआ। ऐसा ही एक काल था 19वीं सदी का विश्व। इस काल में भूमंडलीकरण की प्रवृत्ति को बल मिला था तथा इसके निम्नलिखित महत्वपूर्ण पहलू थे-

1. **एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में वस्तुओं का आदान-प्रदान-** यह वह काल था जब विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की परस्पर आर्थिक निर्भरता बढ़ गई थी। 18वीं सदी में यूरोप की जनसंख्या में व्यापक वृद्धि हुई और बड़ी मात्रा में खाद्यान्नों की जरूरत पड़ी। अतः इस काल में यूरोपीय साम्राज्यवादियों के द्वारा अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका तथा एशिया में खाद्यान्नों के उत्पादन पर विशेष बल दिया गया और उन खाद्यान्नों का आयात किया गया। दूसरी तरफ, यूरोप में औद्योगिकीकरण की गति तेज हो गई थी। अतः यूरोपीय देशों ने अपने औद्योगिक उत्पादों का बड़े पैमाने पर उपनिवेशों में निर्यात किया।

2. **पूँजी का आदान-प्रदान-** जब अन्य महाद्वीपों में कृषि उत्पादन को प्रोत्साहन मिला, तो बड़े क्षेत्र आबाद हुए। वहाँ से अनाजों का निर्यात किया गया। फिर कृषि उत्पाद एवं कच्चे मालों के संग्रह एवं निर्यात के लिए रेलवे एवं बंदरगाह की जरूरत हुई। अतः पश्चिमी देशों ने अन्य महाद्वीपों में बड़ी मात्रा में पूँजी निवेश करना आरंभ किया, विशेषकर इसलिए क्योंकि उन क्षेत्रों में श्रम सस्ता था, अतः पूँजी पर मुनाफा अधिक मिलता।

3. **नवीन तकनीकी का विकास-** नवीन तकनीकी के बिना यह भूमंडलीकरण संभव नहीं था। इसलिए नवीन तकनीकी के रूप में रेलवे, वाष्पचालित जहाज, स्वेज नहर का निर्माण एवं टेलीग्राफ ने अहम भूमिका निभाई। इन्होंने एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में वस्तुओं का आदान-प्रदान संभव बनाया तथा एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र को जोड़ने का काम भी किया।

4. **एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में जनसंख्या का हस्तांतरण-** यह वह काल था जब यूरोप की जनसंख्या बढ़ रही थी। फिर संसाधन एवं रोजगार की खोज में लगभग 50 मिलियन यूरोपीय लोग अमेरिकी महाद्वीप, अफ्रीका एवं एशिया में

प्रवासी के रूप में चले गए। इतना ही नहीं, उन्होंने अन्य महाद्वीपों के लोगों को भी विभिन्न महाद्वीपों में स्थानांतरित किया, ताकि श्रमिकों की समस्या का समाधान हो सके।

- 19वीं सदी के पूर्वार्द्ध तक श्रमिकों की समस्या का हल बहुत हद तक दास व्यापार के माध्यम से खोजा गया था। परंतु 19वीं सदी में तथा विकसित हो रही उदारवादी एवं समाजवादी विचारधारा के युग में दास व्यापार नहीं चल सकता था। इसकी तीखी आलोचना शुरू हो गई थी। इसलिए 1833 में दास व्यवस्था का उन्मूलन हो गया, परंतु अब उसकी क्षतिपूर्ति करने के लिए एक नई व्यवस्था विकसित की गई जिसे अनुबंधित श्रमिक अथवा करार-पत्र श्रमिक (Indentured labour) के नाम से जाना गया। इसमें अन्य महाद्वीपों में निवास कर रहे निर्धन लोगों के साथ यूरोपीय उपनिवेशकर्ताओं के द्वारा करार-पत्र पर हस्ताक्षर कराया जाता और फिर उन्हें अन्य महाद्वीपों में कुछ वर्षों के अनुबंध पर श्रमिक के रूप में भेज दिया जाता। प्रायः उनको चीनी उद्योग अथवा खनन क्षेत्र में काम करने के लिए भेजा जाता।

- पश्चिमी देशों के द्वारा थोपी गई व्यापार और उद्योग नीति के कारण प्रायः उपनिवेशों में देशी उद्योगों का पतन हो गया था और गहन बेरोजगारी का वातावरण उत्पन्न हो गया था। ऐसे में लोग इस तरह के काम को पकड़ने के लिए विवश होते। भारत में भी बिहार, संयुक्त प्रांत, मध्य भारत, तमिलनाडु आदि क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोग अनुबंधित श्रमिक के रूप में कैरेबियाई क्षेत्र, मॉरीशस आदि क्षेत्रों में भेजे गए। अगर वैश्विक स्तर पर देखा जाए, तो लगभग 150 मिलियन लोगों का स्थानांतरण हुआ।

**प्रश्न: अंग्रेज किस कारण भारत से करारबद्ध श्रमिक अन्य उपनिवेशों में ले गए थे? क्या वे वहाँ पर अपनी सांस्कृतिक पहचान को परिरक्षित रखने में सफल रहे हैं? (UPSC-2018)**

(Keywords- उपयुक्त भूमिका- करारबद्ध श्रमिक के संदर्भ में, श्रमिकों से करार करने का कारण, श्रमिक जिन देशों में ले जाए गए, करारबद्ध श्रमिकों के वंशज भारतीय संस्कृति का परिरक्षण कैसे कर रहे हैं, कुछ समस्याएँ, उचित सकारात्मक निष्कर्ष।)

**उत्तर:-**1833 ई. में उदारवादी विचारधारा के फलस्वरूप दास प्रथा का उन्मूलन हुआ। इससे ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप उद्योगों में काम करवाने हेतु श्रमिकों की आवश्यकता पड़ी और इस स्थिति में ब्रिटिश ने भारत में श्रमिकों से करार/अनुबंध किया।

दरअसल ब्रिटेन में औद्योगिकीकरण के कारण बढ़े-बड़े

उद्योगों की स्थापना हुई, जिनसे सूती वस्त्र उद्योग, खनन उद्योग (कोयला, लोहा), रेलवे का विकास हुआ। विशेषकर लोहे को गलाने के लिये कोयला खनन के लिये काफी मजदूरों की आवश्यकता थी, इसलिये ब्रिटिश द्वारा करार किये गए मजदूर मुख्य रूप से कैरेबियाई द्वीप समूह (गुयाना, ट्रिनिडाड, टोबैगो) तथा अन्य देशों, जिनमें फिजी, नेटाल शामिल हैं, में भेजे गए एवं तमिलों को मुख्य रूप से मलाया तथा सूरीनाम भेजा गया, जहाँ इनसे अमानवीय परिस्थिति में घंटों काम करवाया जाता था।

इन अनुबंधित श्रमिकों के साथ भारतीय संस्कृति भी गई, जिसके लक्षण वहाँ आज भी देखे जा सकते हैं। जहाँ मॉरिशस में भोजपुरी के साथ-साथ तमिल, हिन्दी एवं मराठी आदि भाषाओं का प्रयोग होता है, वहीं गुयाना में लोग रामायण के साथ मसालों की खुशबू भी ले गए। इन देशों में होली, दुर्गा पूजा, मुहर्रम आदि त्यौहार भी धूमधाम से मनाए जाते हैं। हालाँकि, साहित्य नोबेल पुरस्कार विजेता वी.एस. नायपॉल, जो अनुबंधित श्रमिकों के वंशज हैं, क्रिकेटर शिव नारायण चंद्रपॉल भारतीय मूल के ही हैं, इन्हें संबंधित क्षेत्र में सांस्कृतिक पहचान पर बल दिये जाने के कारण कई स्थलों पर भेदभाव का शिकार होना पड़ा।

अतः कहा जा सकता है कि जो भारतीय श्रमिक अनुबंधित रूप में गए, वे अपने साथ बंधन के रूप में भारतीय संस्कृति भी ले गए, जिसका वे आज तक भलीभाँति संरक्षण करते आ रहे हैं।

5. **अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्वर्ण-मानक का प्रयोग-** प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्वर्णमान (Gold Standard) का विकास हुआ अर्थात् दुनिया की प्रमुख मुद्राओं का स्वर्ण के साथ समायोजन हुआ, तभी अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का संचालन हो सका। स्वर्णमान एक ऐसी पद्धति थी जिसके माध्यम से स्वाभाविक रूप में विभिन्न देशों की अर्थव्यवस्थाओं के बीच संतुलन होता था। आगे प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात् और विशेषकर विश्व आर्थिक मंदी के काल में परिस्थितियों के दबाव में यह पद्धति टूट गई और फिर भूमंडलीकरण को धक्का लगा।
- द्वितीय विश्व युद्ध के अंतिम काल में ब्रेट्टन वुड्स (Bretton Woods) सम्मेलन के आधार पर स्थापित IMF (अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष) ने डॉलर को वही भूमिका प्रदान की, जो 19वीं सदी में स्वर्ण मानक को मिली थी, अर्थात् इसके पश्चात् विश्व की प्रमुख मुद्राओं का समायोजन डॉलर के साथ होने लगा था।
6. **विश्व की साम्राज्यवादी शक्तियों के द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का संचालन-** उस काल में 5-6 शक्तियाँ अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का संचालन कर रही थीं। ये शक्तियाँ थीं- संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, इटली, फ्रांस तथा ऑस्ट्रिया। ये शक्तियाँ एक देश के द्वारा

दूसरे देश को दिए गए ऋण की गारंटी देती थी। वर्तमान में यही भूमिका विश्व बैंक निभाती है।

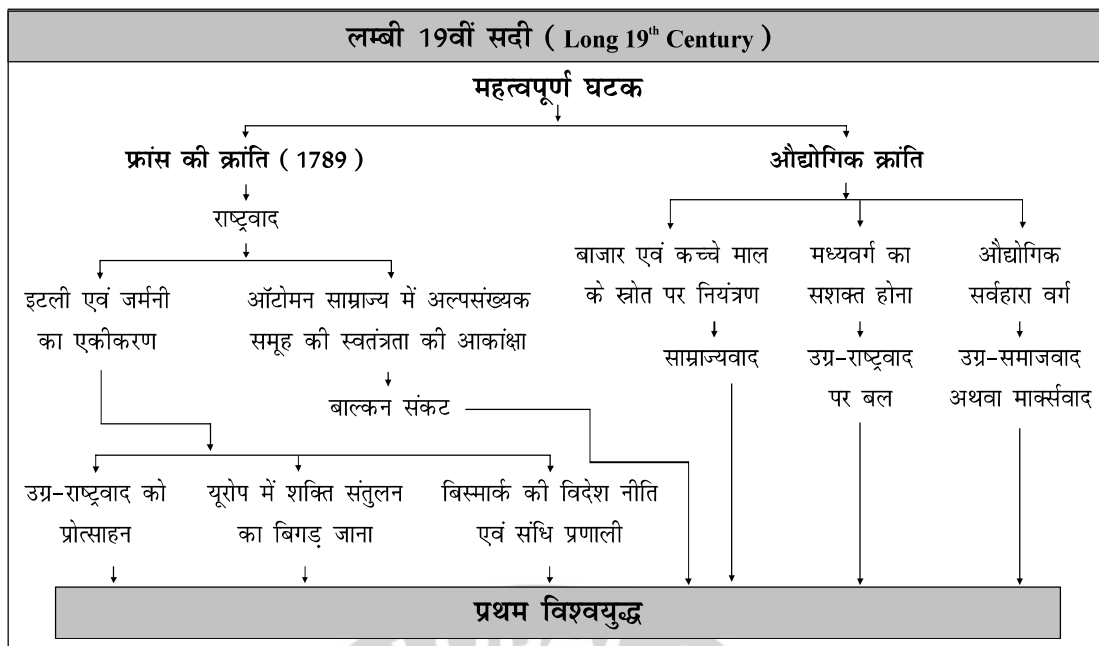
**प्रश्न:- 19वीं सदी का नव-साम्राज्यवाद राष्ट्रवादी कारक की उपज था, न कि औद्योगिक क्रांति की। क्या आप सहमत हैं?**

**(प्रश्न विश्लेषण: यह प्रश्न अपने स्वरूप में 'Argumentative' है। यहाँ 'Keywords' हैं- 'राष्ट्रवादी कारक', 'औद्योगिक क्रांति', 'क्या आप सहमत हैं?' इस प्रश्न का झुकाव इस बात पर है कि राष्ट्रवाद के साथ-साथ औद्योगिक क्रांति की भूमिका को भी स्वीकार किया जाना चाहिये।)**

**उत्तर:-** नव-साम्राज्यवाद को प्रेरित करने में राष्ट्रीयतामूलक तत्त्वों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, फिर भी आर्थिक कारक के महत्व को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

जैसा कि हम जानते हैं कि नव-उपनिवेशवाद अथवा साम्राज्यवाद राष्ट्रीय गौरव के उद्देश्य से भी प्रेरित रहा था। अधिक-से-अधिक क्षेत्रों को औपनिवेशिक नियंत्रण में लेना राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का विषय बन गया था। अलग-अलग देशों के द्वारा अलग-अलग नारे अपनाए गए। उदाहरण के लिए, ब्रिटेन की घोषणा थी कि ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्यास्त नहीं होता, तो जर्मन लोगों का नारा था कि हमें भी सूर्य के नीचे ज़मीन चाहिये। अमेरिका की घोषणा थी '20वीं सदी अमेरिकावासियों के लिये है', जापानियों का आकर्षक नारा था कि 'एशिया, एशियावालों के लिये है'। फिर फ्रांस जैसे राष्ट्र के लिये, जो साम्राज्यवादी प्रसार में सबसे आगे था, राष्ट्रीय गौरव की भावना महत्वपूर्ण उत्प्रेरणा का काम कर रही थी, विशेषकर इसलिये, क्योंकि औद्योगिकीकरण की दृष्टि से फ्रांस, यूरोपीय देशों से पीछे था। अगर गौर से देखा जाए तो यूरोपीय सरकारों के द्वारा राष्ट्रीय गौरव पर बल देकर लोगों का ध्यान आंतरिक समस्याओं से खींचकर बाह्य मुद्दों की ओर उन्मुख करने का प्रयास किया जा रहा था।

परंतु, फिर भी इसका पूरा उत्तरदायित्व महज़ राष्ट्रवादी कारक को नहीं दिया जा सकता। इसमें औद्योगिक क्रांति ने भी महत्वपूर्ण उत्प्रेरक का काम किया। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप कच्चे माल की प्राप्ति, तैयार माल की खपत एवं वित्त निवेश के लिये उपनिवेशों की ज़रूरत हुई। 1870 के दशक तथा उसके पश्चात् यूरोपीय देश एशियाई और अफ्रीकी उपनिवेश की ओर उन्मुख हुए। फिर उग्र राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय गौरव की भावना ने नव-साम्राज्यवाद के लिये उत्प्रेरक का कार्य किया। यही वजह है कि हम राष्ट्रीयतामूलक कारक को महत्व देते हुए भी आर्थिक कारक की भूमिका को अस्वीकार नहीं कर सकते।



**प्रश्न:-** 19वीं सदी एक अतिदीर्घ सदी थी जो 1789 ई. से आरम्भ होकर 1914 ई. में समाप्त हुई। टिप्पणी कीजिए।

**उत्तर:-** 19वीं सदी को दीर्घकालीन सदी माना गया है तथा यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि यह फ्रांस की क्रांति से आरम्भ हुई थी तथा प्रथम विश्व युद्ध के साथ ही समाप्त हुई। इस विचार को प्रेरित करने के पीछे निम्नलिखित तार्किक आधार हैं-

19वीं सदी दो क्रांतियों की सदी थी- फ्रांस की क्रांति एवं औद्योगिक क्रांति। इन दोनों क्रांतियों ने वे परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं, जिनके कारण प्रथम विश्व युद्ध घटित हुआ।

• **फ्रांस की क्रांति-**

1. फ्रांस की क्रांति ने राष्ट्रवाद को जन्म दिया, परन्तु इस राष्ट्रवाद ने शीघ्र ही उग्र अथवा आक्रामक राष्ट्रवाद का रूप ले लिया।
2. राष्ट्रवाद के प्रभाव में जर्मनी का एकीकरण हुआ, परन्तु इसके कारण यूरोप में शक्ति संतुलन बिगड़ गया।
3. राष्ट्रवाद के प्रभाव में बाल्कन संकट ने जन्म लिया जिसकी परिणति अंततोगत्वा प्रथम विश्व युद्ध के रूप में हुई।

• **औद्योगिक क्रांति-**

1. औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप बाजार एवं कच्चे माल की प्राप्ति के लिये यूरोपीय शक्तियाँ एक बार फिर साम्राज्यवाद की ओर मुड़ गईं। फिर साम्राज्यवादी शक्तियों के मध्य प्रतिद्वंद्विता ने प्रथम विश्व युद्ध को जन्म दिया।

2. औद्योगिक क्रांति ने एक तरफ जहाँ एक सशक्त मध्य वर्ग को जन्म दिया, वहीं एक सर्वहारा वर्ग का भी मार्ग प्रशस्त किया। फिर मध्य वर्ग में उत्पन्न उग्र-राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय गौरव की भावना ने नव-साम्राज्यवाद के लिये उत्प्रेरक का कार्य किया। दूसरी तरफ सर्वहारा वर्ग पर मार्क्सवाद के प्रभाव ने अधिकांश यूरोपीय देशों में वर्ग-संघर्ष को प्रोत्साहित किया और वहाँ मार्क्सवादी क्रांति का खतरा उत्पन्न होने लगा। इससे सामाजिक साम्राज्यवाद को बल मिला।

अतः उपर्युक्त दोनों क्रांतियों से उत्पन्न राष्ट्रवाद एवं नव-साम्राज्यवाद जैसी विचारधाराओं ने प्रथम विश्व युद्ध को जन्म दिया।

## अर्तानुशासनात्मक

### 19वीं सदी का भूमंडलीकरण क्या था? इसका संचालन किस प्रकार होता था?

वर्तमान युग से पूर्व भी विश्व भूमंडलीकृत की अवस्था में पहुँच चुका था। ऐसा 19वीं सदी में देखने को मिलता है। इस काल में निम्नलिखित कारकों ने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को प्रोत्साहन दिया-

- यातायात एवं संचार व्यवस्था, रेलवे, वाष्पचालित जहाज एवं टेलिग्राफ के विकास तथा स्वेज नहर के खुल जाने से यातायात एवं संचार में गतिशीलता।
- अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा के रूप में स्वर्ण मानक का उपयोग।
- साम्राज्यवादी शक्तियों के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था का संचालन किया जाता था। अगर कोई भी देश अपने ऋण अधिभार को देने से इंकार कर देते तो फिर इन शक्तियों के द्वारा उससे बलपूर्वक ऋण की वसूली की जाती थी। ऐसा तुर्की के संदर्भ में देखा गया, जब साम्राज्यवादी शक्तियों ने उससे बलपूर्वक ऋण की राशि वसूल की।

### साम्राज्यवाद का पश्चिमी देशों पर प्रभाव

साम्राज्यवाद से पश्चिमी देशों को अत्यधिक लाभ मिला। प्रथम, साम्राज्यवादी शोषण से संग्रहित फंड का उपयोग औद्योगिकीकरण में निवेश के लिये हुआ। दूसरे, 1860 के पश्चात् जब दूसरे औद्योगिकीकरण का दौर आया तो उन्हें उपनिवेशों से कई तरह के फायदे हुए। इस काल में पूंजीगत उद्योगों में कच्चे माल के रूप में खनन उत्पाद प्राप्त हुए। फिर, उपनिवेशों ने मृतदेश के तैयार माल के

लिये बाजार प्रदान किया। उदाहरण के लिये, भारतीय रेलवे के निर्माण के बिना ब्रिटिश रेल एवं इस्पात उद्योग को उतना अधिक प्रोत्साहन नहीं मिल पाता। इसके अतिरिक्त औपनिवेशिक शक्तियों ने पूंजी निवेश के लिये भी उपनिवेशों का उपयोग किया। तीसरे, पश्चिमी देशों में बढ़ते हुए शहरीकरण के कारण बड़ी मात्रा में कृषि उत्पादों की जरूरत पड़ी। अतः पश्चिमी साम्राज्यवाद ने उपनिवेशों की कृषि अर्थव्यवस्था का भी दोहन किया।

साम्राज्यवाद से औपनिवेशिक शक्तियों को कुछ अप्रत्यक्ष लाभ भी था। वस्तुतः उन देशों में औद्योगिकीकरण के परिणामस्वरूप एवं औद्योगिक श्रमिक वर्ग स्थापित हो चुका था तथा वर्ग संघर्ष के कारण संबंधित देश में साम्राज्यवाद की प्रगति हो रही थी। ऐसी स्थिति में उपनिवेश से लूट कर लाए गए धन से वे अपने श्रमिकों के लिये कल्याणकारी कार्यक्रम चलाने लगे। फिर, उनके श्रमिक क्रांति के मार्ग से हटते चले गए। इसके अतिरिक्त साम्राज्यवादी मोर्चे पर संबंधित देश की सफलता के कारण लोगों का ध्यान आंतरिक समस्याओं से हटकर बाह्य मोर्चे पर चला गया। इससे भी समाजवाद की प्रगति अवरुद्ध हुई।

### उपनिवेशों पर साम्राज्यवाद का प्रभाव

उपनिवेशों पर साम्राज्यवाद का बड़ा ही दुखद एवं पीड़ादायक अनुभव रहा। साम्राज्यवादी शक्तियों ने उपनिवेशों की कृषि संपदा को निचोड़ दिया। फिर, पश्चिमी देशों के औद्योगिक उत्पादों ने उपनिवेशों के हस्तशिल्प उद्योगों को गहरा धक्का पहुँचाया। इस कारण उपनिवेशों में क्रयशक्ति कम हो गई।

सबसे बढ़कर यूरोपीय साम्राज्यवाद ने केवल प्राकृतिक संसाधनों का ही दोहन नहीं किया बल्कि उपनिवेशों में मानव श्रम का भी भरपूर दोहन किया। पूर्व काल में अफ्रीकी महाद्वीप से बड़े पैमाने पर दासों को बेचा गया। परंतु 19वीं सदी के उत्तरार्द्ध तक साम्राज्यवादी शक्ति होने तक शोषण का हथकंडा बदलने लगे थे तथा अपनी नई नीति को 'श्वेतों के अधिभार' (Whitemen's burden) का नाम देने लगे थे। अतः अब दास व्यवस्था का स्थान करारबद्ध श्रमिक (Indentured Labour) ने ले लिया था। 19वीं सदी के करारबद्ध श्रमिक को 'दास व्यवस्था की नई पद्धति' का भी नाम दिया जाने लगा था। यह कहा जाता है कि जब ब्रिटिश साम्राज्य के उपर सूरज की चमक आई थी तो पहली चमक चीनी उत्पादक द्वीपों से ही उठी थी। ब्रिटिश साम्राज्य ने कैरिबियन द्वीप मुख्यतः त्रिनिदाद, गुयाना और सुरिनाम, मॉरिशस एवं फिजी में अपने उपनिवेश विकसित किये थे तथा उन क्षेत्रों में करारबद्ध श्रमिकों को भेजना आरंभ किया। इन श्रमिकों को खनन, बागान, रेलवे निर्माण विभिन्न क्षेत्रों में लगाया गया था, परंतु इनका एक बड़ा हिस्सा चीनी उत्पादन में लगाया गया।

अधिकतर करारबद्ध श्रमिक वर्तमान उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत तथा तमिलनाडु से भेजे जाते थे। तमिल मुख्यतः श्रीलंका एवं मलाया भेजे जाते। वस्तुतः 1833-34 में ब्रिटिश उपनिवेशों में जब औपचारिक रूप में दास व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया तो इसकी क्षति-पूर्ति करारबद्ध श्रमिकों (Indentured labour) से की जाने लगी। फिर 1834 और 1900 ई. के बीच लगभग 5 लाख भारतीय केवल मॉरिशस लाए गए। उसी प्रकार करारबद्ध श्रमिकों का पहला समूह गुयाना में 1838 में लाया गया, परंतु 1917 तक उनकी संख्या दो लाख तक पहुँच गई।

अगर हम गहराई से परीक्षण करते हैं तो पाते हैं कि ये करारबद्ध श्रमिक, स्वेच्छा से अन्य देशों की ओर पलायन नहीं करते बल्कि ये शोषणमूलक ब्रिटिश शासन की उपज थे। वस्तुतः ब्रिटिश औद्योगिक नीति के कारण भारतीय हस्तशिल्प उद्योग का पतन हुआ। इस कारण अधिसंख्या में भारतीय बेरोजगार हो गए। उसी प्रकार भूराजस्व की रकम अत्यधिक रखे जाने के कारण किसान अपनी जमीन से हाथ धो बैठते तथा फिर श्रमिक के रूप में कहीं और जाने के लिये विवश हो जाते। आगे 1900 ई. के पश्चात् भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं ने इस पद्धति का जमकर विरोध किया। अंत में, 1921 में यह पद्धति समाप्त कर दी गई।

अगर हम संबंधित देशों में इनकी स्थिति पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि इनमें से कुछ तो भारत वापस आ गए, परंतु एक बड़ी संख्या संबंधित देश में ही बस गई। वर्तमान मॉरिशस में बहुसंख्यक जनसंख्या भारतीय मूल की ही है। कुछ भारतीय मूल के लोगों ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनाई। इनमें त्रिनिदाद के वी.एस. नॉयपौल प्रमुख हैं, जिन्हें साहित्य का नॉबेल पुरस्कार भी मिल चुका है।

इन विदेशी प्रवासियों ने अधिकतर अपनी संस्कृति एवं पहचान को बनाए रखने का प्रयास किया था। मॉरिशस में भोजपुरी के साथ-साथ हिन्दी, तमिल, तेलुगू, मराठी आदि भाषाओं का भी प्रयोग होता रहा। उसी तरह, भारतीय गुयाना में रामायण की कहानी के साथ मसाले की खुशबू भी लेकर गए। कई बार सांस्कृतिक पहचान पर बल दिये जाने के कारण संबंधित क्षेत्र में सांस्कृतिक तनाव की स्थिति भी आ जाती। फिर, कई स्थलों पर इन्हें भेदभाव का शिकार भी होना पड़ा।

### संविधानवाद का विकास

यूरोपीय मध्यवर्ग ने सदा ही सीमित मताधिकार पर बल दिया था, परंतु समाजवादी क्रांति के भय से पूंजीवादी सरकारों ने श्रमिक कल्याण का नया कार्यक्रम शुरू कर दिया तथा संविधान में 'गणतंत्रवादी समाजवाद' जैसा शब्द उल्लिखित किया।

